SYLLABUS

HINDI PAPER 1

इकाई - 1

हिन्दी भाषा तथा व्याकरण

हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास, हिन्दी भाषा की प्रमुख बोलियाँ - राजस्थानी, ब्रज, खड़ी बोली, अवधी, भोजपुरी । राजस्थानी भाषा का प्राचीन स्वरूप - डिंगल; राजस्थानी भाषा की प्रमुख बोलियाँ, मारवाड़ी, मेवाती, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी, वागड़ी। राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति तथा मानक हिन्दी। देवनागरी लिपि की विशेषताएं तथा मानकीकरण।

हिन्दी व्याकरण - मानक वर्णमाला, शब्द तथा शब्द निर्माण - उपसर्ग, प्रत्यय, संधि (स्वर, व्यंजन), समास, वाक्य एवं वाक्य भेद, शब्द शुद्धि एवं वाक्य शुद्धि। शब्द के व्याकरणिक प्रकार - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, सम्बंध सूचक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय ।

इकाई 2

भारतीय काव्यशास्त्र

काव्य परिभाषा, काव्य लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन, साहित्य का स्वरूप।

भारतीय काव्यशास्त्र - रस सिद्धांत तथा साधारणीकरण, रस निष्पत्ति, ध्वनि सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत, अलंकार सिद्धांत ।

अलंकार अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, संदेह, भ्रांतिमान, विभावना, वयण सगाई, अपन्हुति ।

छंद– दोहा, चौपाई, सोरठा, उल्लाला, छप्पय, कुंडलियां, गीतिका, हरिगीतिका, मंदाक्रांता, द्रुतविलंबित, कवित्त ।

इकाई 3

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

प्लेटो का काव्य सिद्धान्त। अरस्तू का काव्य सिद्धान्त - अनुकरण, विरेचन और त्रासदी; लौंजाइनस उदात्त सिद्धान्त; क्रोचे - अभिव्यंजना सिद्धान्त; कॉलरिज कल्पना सिद्धान्त; टी. एस. एलियट परंपरा एवं निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त, मार्क्सवादी साहित्य चिन्तन, उत्तर आधुनिकतावाद तथा विखण्डनवाद ।

इकाई 4

आदिकाल एवं मध्यकालः निर्धारित पाठ

- पृथ्वीराज रासो (पद्मावती समय) चंदबरदाई, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी
- कबीर ग्रन्थावली - (सं. श्यामसुन्दर दास) आरंभिक 20 पद, साखियाँ - गुरु कौ अंग एवं विरह कौ अंग (प्रकाशक - नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी)
- मीराँ पदावली - सं० डॉ० शम्भुसिंह मनोहर (प्रका0 रिसर्च पब्लिकेशनस, जयपुर)
- भ्रमरगीत सार - (सं. रामचन्द्र शुक्ल) - 21 से 50 पद (प्रकाशक नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी)

- जायसी ग्रन्थावली - नागमती वियोग खंड (सं. रामचन्द्र शुक्ल) (प्रकाशक - नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी)
- कवितावली - तुलसीदास - पद संख्या 65 से 110 (नाम - विश्वास, कलि-वर्णन, राम - नाम - महिमा) (प्रकाशक - गीता प्रेस, गोरखपुर)
- बिहारी रत्नाकर - (सं. जगन्नाथ दास रत्नाकर) आरंभिक 25 दोहे (प्रका० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ)
- घनानंद कवित्त - (सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) 1 से 25 तक छंद (प्रका० वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी)

इकाई 5

आधुनिक कालः निर्धारित पाठ

- कामायनी - जयशंकर प्रसाद (चिंता तथा श्रद्धा सर्ग)
- राम की शक्ति पूजा - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- अंधेरे में - गजानन माधव मुक्तिबोध
- गोदान प्रेमचन्द
- महाभोज (उपन्यास) - मन्नू भण्डारी
- आधे-अधूरे मोहन राकेश
- निबंध- श्रद्धा और भक्ति (रामचन्द्र शुक्ल), नाखून क्यों बढ़ते हैं (हजारी प्रसाद द्विवेदी), राघवः करुणो रसः (कुबेरनाथ राय)
- कहानियाँ - उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी), कफ़न (प्रेमचन्द), पुरस्कार (जयशंकर प्रसाद), रोज़ (अज्ञेय), गदल (रांगेय राघव), परायी प्यास का सफर (आलमशाह खान), सलाम (ओमप्रकाश वाल्मीकि), आपकी छोटी लड़की (ममता कालिया) ।
- यात्रा वृत्तान्त : सौंदर्य की नदी नर्मदा - अमृतलाल वेगड